आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2308 • उदयपुर, सोमवार 19 अप्रेल, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

देश का ऐसा शहर, जहां शहीदों के नाम पर हर मार्ग

शेखावटी की वीर प्रसूताओं के लाडलों की वीर गाथाएं प्रदेश ही नहीं वरन् देशभर के हर किसी के जुबान पर मिल जाती है। सरहद की रक्षा में यहां के वीर सैनिको के अदम्य साहस और शहादत सबसे आगे की पक्ति में शुमार है। यही कारण है कि देश में सर्वाधिक सैनिक देने वाला जिला झुंझुनुं कहलाता है। ऐसे में भला क्यों झुंझनुं के शहीदों की यादें चिरस्थायी नहीं हो ? यही कारण है कि झुंझुनु शहर का हर बड़ी–छोटी सड़क मार्गो का नामकरण शहीदों के नाम से मिल जाएगा। प्रदेश ही नहीं शायद देशभर का एकमात्र झुंझुनुं शहर होगा जहां हर मार्ग शहीदों के नाम से है। शहीदों की यादों को चिरस्थायी बनाने के लिए पहल की गई। पदक प्राप्त करने वाले शहीदों के नाम से सड़कों के नामकरण का प्रस्ताव लिया गया है।

- हवालदार मेजर पीरूसिंह परमवीर चक्र, पीरूसिंह सर्किल से नेहरूपार्क तक।
- नायब सूबेदार हरिराम वीरचक्र, गांधी चौक से जेपी जानू स्कूल तक।
- मनीराम वीरचक्र, गांधी चौक से खेमी शक्ति।
- रायफलमैन गिरवरसिंह सेना मेडल, मोदी रोड।
- सिपाही बिरदाराम वीर चक्र, मोनू कॉम्पलेक्स से रोड नंबर तीन।
- नायक बजरंगलाल सेना मेडल, रोड नंबर एक से रोड नंबर तीन तक।
- रायफल मैन रोहिताश सेना मेडल, केशव स्कूल से बस डिपो।
- सूबेदार मदनलाल वीरचक्र, जीलाल पेट्रोल पंप से किसान कालोनी।
- हवलदार शीशराम गिल वीरचक्र सर्किट हाउस से किसान कालोनी।
- सिपाही महिपालसिंह शौर्य चक्र, महाराज सूरजमल सर्किल से हवाईपट्टी मैनगेट।
- हवालदार भीमसिंह शौर्य चक्र, जेबीशाह गर्ल्स कॉलेज के पीछे रोड।
- सिपाही नेत्रभान शौर्य चक्र, लांबा कोचिंग के सामने हाउसिंग बोर्ड रोड।
- सिपाही रामवतारसिंह सेना मेडल, हाउसिंग बोर्ड कार्यालय वाला रोड।
- सिपाही सुरेन्द्रसिंह शौर्य चक्र, चूरू रोड डाइट से दीनदयाल नागर।
- नायक राजसिंह शौर्य चक्र, शाहों के कुआं से कमल हाइट्स।
- लांस नायक भगवानसिंह सेना मेडल, अणगासर रोड से रामनगर।
- सबेदार मेजर रामपालसिंह सेना मेडल, स्टेडियम से विवेकनगर।
- सिपाही विनोदकुमार सेना मेडल, जेबी शाह कॉलेज के सामने वाला रोड़।
- मेजर प्रदीप शर्मा सेना मेडल, गांधी चौक से अहिंसा सर्किल।
- शहीद इंद्रसिंह सैनी, अग्रसेन सर्किल से मेजर प्रदीप शर्मा मार्ग।

मिलिए उनसे जो पहली बार जा रहे अंतरिक्ष सैर पर

दुनिया में पहली बार आम लोगों को अंतरिक्ष भेजने के लिए टेस्ला व स्पेस कंपनी के संस्थापक एलन मास्क ने 'इंस्पिरेशन–4' मिशन की कल्पना की थी। जो अब सच होने जा रहा है। इसके तहत साल 2021 के अंत तक अंतरिक्ष मे पहले ऑल–कमर्शियल एस्ट्रोनॉट क्रू को भेजने का लक्ष्य है। इस मिशन में चार लोगों को चुना गया है। मिशन का संचालन चैरिटी से होगा। जिसकी जिम्मेदारी अमरीकी उद्योगपति जेरेड इसाकमैन ने ली है। वह स्वयं इस मिशन के पहले यात्री के रूप में शामिल है।

अर्केन्यू हैले– 29 वर्षीय अर्केन्यू हैले, सेंट ज्यूड हॉस्पिटल में कार्यरत है। वह स्वयं हड्डी कैंसर सर्वाइवर है। अंतरिक्ष में जाने वाली वह सबसे कम उम्र की अमरीकी होंगी।

क्रिस सेम्ब्रोस्की– 41 वर्षीय क्रिस सेम्ब्रोस्की को 72,000 दावेदारों में से चुना गया। वह स्पेस कैम्प काउंसलर है।

जेरेड इसाकमैन– मिशन के कमांडर की भूमिका में 37 वर्षीय जेरेड इसाकमैन होंगे। वह पेन्सिलवेनिया स्थित शिट 4 पेमेंट्स कंपनी के संस्थापक और सीईओ है। प्रशिक्षित पायलट भी है।

सियान प्रॉक्टर– 51 वर्षीय सियान प्रॉक्टर एक उद्यमी, शिक्षक और प्रशिक्षित पायलट है। करीब 200 दावेदारों के बीच उनका चयन हुआ है।

सेवा–जगत्
दिव्यांगों की सेवा में, आपकी नारायण सेवा

हरिद्वार (महाकुंभ) में बना नारायण सेवा संस्थान का अस्थायी चिकित्सालय

हरिद्वार में हो रहे कुंभ मेले के लिए उदयपुर के नारायण सेवा संस्थान द्वारा अस्थायी अस्पताल का निर्माण किया गया है। हरिद्वार में बने इस अस्थाई थी अस्पताल में 50 बेड की क्षमता है। जिसमें कोरोना प्रोटोकॉल के तहत मरीजों को निशुल्क उपचार दिया जाएगा। इस अस्पताल में अत्याधुनिक उपकरण के साथ ही फिजियोथैरेपी, ऑपरेशन थिएटर, प्लास्टर रूम और ऑर्थोटिक्स वर्कशॉप की सुविधा भी उपलब्ध होगी। इसके साथ ही संस्थान द्वारा कुंभ में आने वाले दिव्यांगों को निशुल्क कृत्रिम अंग वितरण भी किया जाएगा।

नारायण सेवा संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि हरिद्वार पवित्र स्थल है। जहां आस्था का संगम होता है। ऐसे में नारायण सेवा संस्थान द्वारा यहां आने वाले लाखों तीर्थयात्रियों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए यह फैसला लिया गया है। संस्थान द्वारा यहां दिव्यांग और तीर्थयात्रियों के लिए कृत्रिम अंग वितरण शिविर का आयोजन भी किया जाएगा। जिसमें जरूरतमंद लोगों को निशुल्क भोजन और फेस मास्क वितरण की सुविधा भी उपलब्ध होगी।

राहुल को लगे कृत्रिम पैर

शाहदरा– दिल्ली निवासी एवं संस्थान के विशिष्ट सेवा प्रेरक श्री रविशंकर जी अरोडा ने लॉक डाउन (कोरोना काल) के दौरान दोनों पांवों से दिव्यांग एक युवक के कृत्रिम पैर लगवाए।

दिल्ली के बदरापुर निवासी युवा क्रिकेट खिलाड़ी 2018 में जबलपुर मैच खेलने गए थे। लौटते समय चलती ट्रेन से नीचे गिर पड़े और पांव पहियों के नीचे आकर कट गए थे। राहुल को अब चलने फिरने में किसी सहारे की जरूरत नहीं है। उन्होंने संस्थान एवं व उसके विशिष्ट सेवा प्रेरक–अरोड़ा जी का आभार व्यक्त किया है।

घर लेट पहुंचती तो डांट पड़ती थी, आज टीम को लेकर कर रहीं देश भ्रमण

इंसान में यदि कुछ करने का जज्बा हो तो परेशानियां भी अपना रास्ता बदल लेती हैं और काफिला साथ चल पड़ता है। ऐसा की कुछ हुआ निधि बरैया के साथ। ग्रामीण परिवेश में पली–बढ़ी निधि को कराटे सीखने के लिए शाम जाना होता, जिस पर परिजन डांटते। रिश्तेदार कहते, बेटी है क्या करेगी कराटे सीखकर, हमारे गांव (मगंलपुर) की बेटियां ये बस नहीं करतीं, लेकिन धीरे–धीरे कराटे की प्रति उसकी लगन को देखकर माता–पिता साथ आए और फिर रिश्तेदारों ने भी साथ दिया। निधि जब कॉमनवेल्थ–2017 में ब्रॉन्ज मेडल लेकर आई तो सभी ने पलकों पर बैठा दिया।

11वीं कक्षा से चुना कराटे– मुझे छठी कक्षा से ही खेलों में रूचि थी। ग्यारहवीं कक्षा में मैंने कराटे को चुना आर उसकी क्लास लेने की शुरूआत की। क्लास लेकर आते–आते रात हो जाती। पहले मैं 4 किमी दूर जाती तो कई सवाल–जवाब होते थे, लेकिन आज मैं टीम को 400 किमी दूर लेकर जाती हूं और पापा गर्व से भेजते हैं।

बेटियों को निकाला चारदीवारी से

निधि ने सिर्फ अपना कॅरियर बनाया, बल्कि अन्य बेटियों को भी पढ़ाई व खेल के लिए घर से निकाला। उनके माता–पिता को समझाया। दीपशिखा तीसरी कक्षा से उसकी सहेली थी। उनके माता–पिता उसे 10वीं के बाद नहीं पढ़ा रहे थे। इस पर निधि ने उन्हें समझाया। आज दीपशिखा ग्रेजुएशन के बाद पीजी की तैयारी कर रही है। उसने कराटे सीखे हैं।

संभाग के छात्रों को कर चुकी ट्रेंड

निधि अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी है। वह ग्वालियर के चम्बल संभाग स्थित कस्तूरबा गांधी होस्टल में रहने वाले बच्चों को ट्रेंड करती है। अभी तक वह मोहना, बड़ागांव, मोहनगढ़, हस्तिनापुर, उटीला आदि में ट्रेनिंग दे चुकी है।

अपने ज्ञान पर घमंड न करें

गुरुनानक देवजी अपने शिष्यों के साथ एक ऐसे गांव के पास पहुंचे जो विद्वानों का गांव था। गुरुनानक ने गांव में प्रवेश नहीं किया और गांव की सीमा पर ही अपना डेरा डाल दिया। सभी शिष्यों को ये बात बहुत अजीब लगी कि गुरुनानक सीधे गांव में नहीं गए, लेकिन किसी ने कुछ कहा नहीं।

अगले दिन उस गांव के कुछ लोग गुरुनानक के पास पहुंचे। वे लोग एक गिलास में दूध लबालब भरकर लाए थे। उन्होंने वह गिलास गुरुनानक के सामने रख दिया। गुरुनानक ने उस गिलास में गुलाब की कुछ पंखुड़िया डाल दीं। गांव के लोग गिलास उठाकर लौट गए।

कुछ देर बाद गांव के लोग फिर से आए और उन्होंने गुरुनानक को अपने गांव में आने का निमंत्रण दिया। ये देखकर सभी शिष्य हैरान थे।

गांव वालों के जाने के बाद शिष्यों ने कहा, हमें कुछ समझ नहीं आया। पहले तो हमने गांव के बाहर डेरा दिया। फिर गांव के लोग दूध का गिलास लेकर आए, आपने उसमें फूल की पत्तियां डाल दीं और फिर वे लोग आपको आमंत्रित कर रहे हैं।

गुरुनानक ने कहा, ये एक सांकेतिक भाषा है। दरअसल, ये गांव विद्वानों का गांव है। हम ये बात पहले से जानते हैं। इसीलिए गांव में सीधे प्रवेश नहीं किया। वहां से संकेत आया कि यहां गिलास में दूध की तरह ज्ञान लबालब भरा है। अब आप हमें क्या देने आए हैं? तब मैंने गुलाब की पत्तियां डालकर ये कहा कि आपके ज्ञान के साथ हम कोई छेड़छाड़ नहीं करेंगे। हमारे पास जो भी समझ है, वह आपके ज्ञान के ऊपर रखकर लौट जाएंगे। गांव वालों ने ये बात स्वीकार कर ली और हमें गांव में आने का निमंत्रण दिया।

गिलास में दूध लबालब भरा था, अगर उसमें कुछ और चीज डाली जाती तो दूध छलक जाता। इसीलिए गुरुनानक ने उसमें फूल की पत्तियां डाल दीं। फूल की पत्तियों से गिलास के दूध में कोई छेड़छाड़ नहीं हुई।

दुनिया में सभी अपने–अपने ढंग से विद्वान हैं, लेकिन जब दो विद्वान मिलते हैं तो उनके बीच टकराव हो जाता है। ऐसा नहीं होना चाहिए। एक विद्वान का ज्ञान दूसरे विद्वान की भावनाओं को आहत न करे, इस बात का ध्यान रखना चाहिए। हम ज्ञानी है, इस बात का घमंड न करें और दूसरों को मूर्ख समझने की गलती न करें। दूसरों की अक्ल, जानकारी और समझदारी का भी सम्मान करना चाहिए।

सम्पादकीय

राष्ट्र रक्षा का दायित्व किसका है ? क्या सरकार के जिम्मे यह है, क्या सेना के जिम्मे है या जनता के ? ये सभी घटक यों तो एक ही इकाई है। मोटे तौर पर इन्हें समवेत रूप में ही देखा जाता है। किन्तु जब भी राष्ट्र रक्षा का प्रश्न आता है तो लोग सेना और सरकार को ही उत्तरदायी मानते हैं हमने राष्ट्ररक्षा के लिये अपने मन में यह बिठा दिया है कि केवल सीमा पर जाकर लड़ना ही राष्ट्र रक्षा है। यह विचार एकांगी है। वास्तव में तो हर देशवासी का दायित्व है देश की रक्षा करना। यह ठीक है कि सभी के राष्ट्र रक्षा के उपक्रम अलग–अलग होंगे, पर उनका परिणाम एक सा होगा। हमें देशवासी के रूप में, राष्ट्र–संतान के रूप में जो भी कार्य मिला है उसे पूरे मन से संपादित करेंगे तो यह भी राष्ट्र सेवा ही है। राष्ट्र की रक्षा या सेवा कोई एक या कोई विशेष कार्य ही नहीं है। राष्ट्र तो अनेक आयामों से सुदृढ़ होता है अतः यह न सोचें कि सैनिक होना या सरकार में रहकर ही राष्ट्र रक्षा संभव है। राष्ट्र रक्षा तो कदम–कदम पर होती है।

कुछ काव्यमय

राष्ट्र रक्षा के लिये हमें,
संकल्पित होना होगा।
अपने कर्तव्यों के बीजों
को हमको बोना होगा।
हर व्यक्ति अपने स्तर पर ही
करता रहे देश का काम।
समृद्ध होगा, सुदृढ होगा,
होगा जग में देश का नाम।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

सफलता की कहानी

जन्म के छः माह बाद बुखार में पिपलगाँव, बुलढ़ाना (महाराष्ट्र) के घनश्याम का पांव पोलियोग्रस्त हो गया। परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होते हुए भी महाराष्ट्र एवं आन्ध्रप्रदेश सहित कई स्थानों पर इलाज के लिए दिखाया, लेकिन सब कोशिशें बेकार रही। टी.वी. पर संस्थान का कार्यक्रम देखकर घनश्याम अपने बड़े भाई के साथ संस्थान पहुंचा।

संस्थान के चिकित्सकों द्वारा घनश्याम के पांव की जांच की गई और वह सुनहरा दिन आया था जब घनश्याम के पांव का सफल ऑपरेशन हुआ। घनश्याम की आँखों में खुशी के आंसू छलक पड़े जब वह कैलिपर पहन कर अपने पांवों पर चलने लगा। ऐसे एक–दो नहीं 4,22000 से अधिक दिव्यांगों को अपने पांवों पर खड़ा किया है संस्थान ने। यह सब आपके आर्थिक सहयोग से ही सम्भव हो पाया है।

अपनों से अपनी बात

क्षमताओं को व्यापक बनाएं

ऊर्जा व उद्देश्य रखने वाले सफलता पाते हैं। जो माता–पिता कठिन परंतु वास्तविक चुनौतियों का सामना करते हैं, वे सफलता का अनुमोदन करते हैं, सफलता को सहज लेते हैं और उनके बच्चे अधिकतम आत्मविश्वासी होते हैं।

समय आने पर संसार सभी प्रश्नों का उत्तर पा जाता है। सपनों को जीना आरंभ करने पर शक्ति आती है। प्रत्येक संघर्ष में मील का पत्थर बनने के लिए महत्वाकांक्षा जीवन का प्राणतत्व है। महत्वाकांक्षा सबसे दृढ़ एवं रचनात्मक शक्ति है। जीवन का अर्थ महत्वाकांक्षा है। यह ऊर्जा और दृढ़ता का समन्वय है। जहां स्पष्ट लक्ष्य नैतिक संरचना के साथ होते हैं। जीतना या प्राप्त करना सभी को प्रिय लगता है। जीतना गति की तीव्रता को कई गुना बढ़ाता है। जीतने पर अगली बार की चुनौतियों के लिए और अधिक तैयार होने के लिए

अवसर मिल जाता है। जो कुछ भी पहले से है, उससे संतुष्ट न होना ही महत्वाकांक्षा है। क्षमताओं और निपुर्णताओं को व्यापक करने के लिए क्रिया और आगे बढ़ने का प्रयास अनिवार्य है। चुनौतियां लेना महत्वाकांक्षा की प्रक्रिया का एक भाग है। मानव व्यवहार के सभी संवेगों में महत्वाकांक्षा सबसे शक्तिशाली है। इसमें बहुत कुछ खोना भी पड़ता है। चुनौतियां काम को अधिक संतोषजनक बनाती है। महत्वाकांक्षा सभी में पायी जाती है, पर इसका एक पैमाना होता है जिस पर निर्भर करता है कि कितनी दूर जाने की इच्छा है और कितने में प्रसन्नता कायम रह सकती है। महत्वाकांक्षा ऊर्जा व दृढ़ता है परंतु यह लक्ष्यों को पूर्ण करने का आमंत्रण भी है।

ऊर्जा व उद्देश्य रखने वाले सफलता पाते हैं। जो माता–पिता कठिन परंतु वास्तविक चुनौतियों का सामना करते हैं, वे सफलता का अनुमोदन करते हैं, सफलता को सहज लेते हैं और उनके बच्चे अधिकतम आत्मविश्वासी होते हैं। सुख के सूत्र की यह उड़ान मूल्यवान है। मनुष्य से बड़ा कोई सत्य नहीं है। पुरुषार्थ में आस्था, विश्वास और संघर्ष की विजय का संदेश छिपा रहता है। किसी को पकड़कर कभी कोई शिखर पर नहीं पहुंचता।

— कैलाश 'मानव'

बिना दान दिये नहीं सुधरता परलोक

राजा श्वेत ने जिस लगन से राज्य का संचालन किया था, उससे भी अधिक लगन से हजारों वर्ष तक तपस्या की। उत्तम तपस्या के प्रभाव से उन्हें ब्रह्मलोक की प्राप्ति हुई। वहाँ सब तरह की सुख–सुविधा मिली, किन्तु भोजन का कोई प्रबन्ध न था। भूख के मारे उनकी इन्द्रियाँ विकल हो गयीं। उन्होंने ब्रह्माजी से पूछा कि यह लोक भूख–प्यास से रहित माना जाता है फिर किस कर्म से मैं भूख से सतत् पीड़ित रह रहा हूँ।

विदर्भ देश में श्वेत नामक राजा राज्य करते थे। कुछ ही दिनों में राजा के मन में वैराग्य हो गया। तब वे अपने भाई को राज्य सौंपकर वन में तपस्या करने चले गये। उन्होंने जिस लगन से राज्य का संचालन किया था, उससे भी अधिक लगन से हजारों वर्ष तक तपस्या की। उत्तम तपस्या के प्रभाव से उन्हें ब्रह्मलोक की प्राप्ति हुई।

वहाँ सब तरह की सुख–सुविधा मिली, किन्तु भोजन का कोई प्रबन्ध न था। भूख के मारे उनकी इन्द्रियाँ विकल हो गयीं। उन्होंने ब्रह्माजी से पूछा कि यह लोक भूख–प्यास से रहित माना जाता है फिर किस कर्म के विपाक से मैं भूख से सतत् पीड़ित रह रहा हूँ। ब्रह्माजी ने कहा – वत्स ! मृत्युलोक में तुमने कुछ दान नहीं किया, किसी को कुछ खिलाया नहीं, वहाँ बिना कुछ दान दिये परलोक में खाने को नहीं मिलता। भोजन से तुमने केवल अपने शरीर को पाला है, इसलिये उसी मुर्दे शरीर को वहाँ जाकर खाना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त तुम्हारे भोजन का और कोई मार्ग नहीं है।

तुम्हारा वह शव अक्षय बना रहेगा। सौ वर्ष बाद महर्षि अगत्स्य तुम्हारा उद्धार करेंगे। ठीक सौ वर्ष बाद देवयोग से महर्षि अगत्स्य सौ योजन वाले उस विशाल वन में जा पहुँचे। वह जंगल बिल्कुल सुनसान था। वहाँ न कोई पशु था, न पक्षी। उस वन के मध्य में चार कोस लम्बी एक झील थी।

अगस्त्य जी को उसमें एक मुर्दा दिख पड़ा। उसे देखकर महर्षि सोचने लगे कि यह किसका शव है ? यह कैसे मर गया। इसी बीच आकाश से एक अद्भुत विमान उतरा। उस विमान से एक दिव्य पुरुष निकला। वह झील में स्नान कर उस शव का मांस खाने लगा। भरपेट मांस खाकर वह सरोवर में उतरा और उसकी छटा निहारकर फिर स्वर्ग की ओर जाने लगा। महर्षि अगस्त्य ने उससे पूछा –देखने में तो तुम देवता मालूम पड़ते हो, किन्तु तुम्हारा यह आहार बहुत ही घृणित है। तब उस स्वर्गवासी पुरुष ने अपना पूरा वृतान्त कह सुनाया, और यह भी बताया कि हमारे सौ वर्ष पूरे हो गये हैं। पता नहीं महर्षि अगस्त्य मुझे कहाँ कब दर्शन देंगे, और मेरा उद्धार होगा ?

अगत्स्य ने कहा "मैं ही अगस्त्य हूँ।" बताओ तुम्हारा क्या उपकार करूँ ? तब उसने कहा– मैं अपने उद्धार के लिये आपको एक अलौकिक आभूषण भेंट करता हूँ। इसे आप स्वीकार कर मेरा उद्धार करें। निर्लोभ महर्षि ने उसके उद्धार के लिए उस आभूषण को स्वीकार कर लिया। आभूषण के स्वीकार करते ही वह शव अदृश्य हो गया और उस पुरुष को अक्षयलोक की प्राप्ति हुई।

इच्छा तो है इस चमन को
गुलजार कर दूँ!
कुछ नहीं तो रास्ते का
खार ही साफ कर दूँ।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

डॉ. अग्रवाल के चरण धोने वाले पानी को उसने परात से हाथों में लिया और अपने पूरे शरीर पर छिड़क दिया। कई लोगों को कैलाश का यह कृत्य हास्यापद लगा हो सकता है मगर वह ऐसे उपहास का आदी हो चुका था। उसने खड़े होकर डॉ. अग्रवाल का आभार व्यक्त किया साथ ही उन तमाम लोगों का भी आभार व्यक्त किया जो उसकी इस सफलता के माध्यम बने। उसने कहा कि पुरस्कार भले ही प्रतीक रूप में मिला हो मगर इस पुरस्कार के तमाम लोग भागीदार हैं। जिन्होंने उसके सेवा रथ को आगे बढ़ाने में अप्रतिम योगदान दिया।

पद्मश्री मिलने के बाद सौभाग्य ने एक बार फिर उसका द्वार खटखटाया, मगर शायद पहले ही भाग्य की उस पर हुई कृपा से वह इतना संतृप्ता था कि उसने द्वार नहीं खोले। यह उसकी अज्ञानता थी कि नासमझी, प्रधानमंत्री कार्यालय से उसे एक प्रस्ताव मिला जो उसने अत्यन्त विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया। बाद में जब लोगों से इसका जिक्र किया तो सबने उसे यही कहा कि प्रस्ताव स्वीकार करना चाहिए था। उसने स्वयं भी इस पर मनन किया तो उसे एहसास हुआ कि उसने भारी भूल कर दी थी। वह पश्चाताप की आग में जलने लगा तो मगर उसका कोई लाभ नहीं था।

अंश-233

प्रकृति से माइग्रेन है तो रोज पिएं एक कप अंगूर का जूस

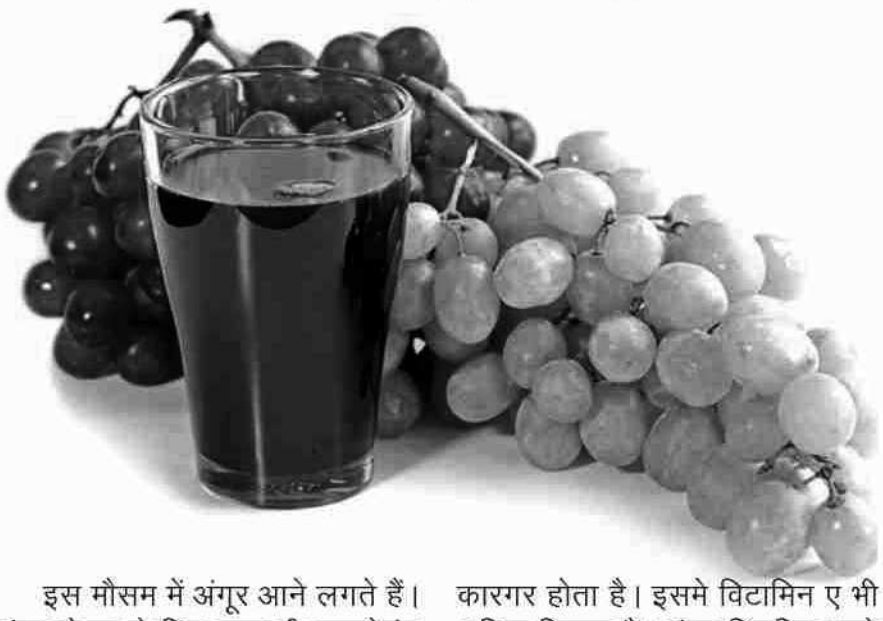

इस मौसम में अंगूर आने लगते हैं। अंगूर सेहत के लिए बहुत ही फायदेमंद होते हैं। अगर किसी को माइग्रेन की समस्या है तो उसे रोज एक कप अंगूर का जूस पीना चाहिए। माइग्रेन के दर्द मे आराम मिलता है। अंगूर में प्राकृतिक रूप से एंटी इंलेमेटरी गुण पाए जाते हैं। इसमें स्टैनिन नामक तत्व मिलता है जो माइग्रेन के दर्द को में आराम देता है। इसमे भरपूर मात्रा में विटामिन सी मिलता है जो इम्यूनिटी बढ़ाने में कारगर होता है। इसमे विटामिन ए भी अधिक मिलता है। अंगूर नियमित खाने से आंखों और त्वचा से जुड़े रोगों से बचाव भी होता है। इसके एंटीऑक्सीडेंट गुण और एंटीइंलेमेटरी गुण किडनी से जुड़े रोगोंसे भी बचाव करते है।अंगूर मीठा होता है इसलिए डायबिटीज के रोगी अपने डॉक्टर की सलाह के बाद ही इसे खांए। इसे खाली पेट खाने से गैस और अपच की समस्या हो सकती है।

अनुभव अमृतम्

हमें किसी ने बता दिया नरसी भगवान का हाथ लग जायेगा। थोड़ा जोर से लगेगा वो तेज गति से घूमा रहे है। चोट लगेगी, डरना मत। हाथ लग जायेगा। कल्याण हो जायेगा। कल्याण हो गया। कल्याण किसको कहते है? कामनाएं शेष ना रहे, आवश्यक कार्य कर लिए जाये, अनावश्यक कार्य छोड़ दिये जाये। राग कम हो जाये। समाप्त हो जाये। द्वेष समाप्त हो जाये। क्रोध कम हो जाये, घमण्ड ना रहे। यही उद्धार हो रहा है तो हो। नरसी भगवान का मुखौटा धारण कर हमारे आचार्य पण्डित जी अच्छा शरीर सुगठित हाथ हिला रहे हैं, बरामदे में घूम रहे हैं। हमारे जैसे कई बच्चे और बड़े पिताजी भी उनके सामने आ रहे उनका स्पर्श अपने चेहरे पर, मुंह पर करवा रहे हैं। अद्भुत दृश्य बाहर आये। एक तख्ते पर एक कुर्सी लगी हुई है, जिस पर प्रहलाद जी बिराजमान है। समाज के एक महानुभाव आते हैं प्रहलाद जी को अपने कन्धे पर बिठाते हैं। सामने की तरफ हिरण्यकश्यप उछल रहा है। घमण्ड में चूर–चूर हो रहा है, बक–बक कर रहा है। प्रहलाद जी आते ही कहते हैं पिताजी मान लो हरि है, पिताजी मानलो विष्णु भगवान है। नहीं–नहीं प्रहलाद मैं तुझे दण्ड़ दूंगा। तुझे अग्नि में झोंक दूंगा, तुझे जहर दे दूंगा। तूं कह मैं हरि हूँ। मैं तेरा पिता हूँ तूं मेरा बेटा है, तूने मेरे अंश से जन्म लिया है। मेरे को हरि बोलना है।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 113 (कैलाश 'मानव')

दूसरों की प्रसन्नता में अपनी प्रसन्नता

नगर के लिए सार्वजनिक पार्क की आवश्यकता थी, किंतु जमीन सोने के तौल में भी नहीं मिल रही थी। इस बात का पता चलते ही उद्योगपति विलयन एलनाइट ने अपनी 100 बीघे की खाली पड़ी जमीन, जिसमें वे एक बड़ी फैक्ट्री लगाने जा रहे थे, कार्पोरेशन का दान कर दी। इस पुनीत कार्य के लिए उनका अभिनन्दन किया गया। अपने सम्मान का उत्तर देते हुए एलन ने कहा–"जमीन देकर मुझे तीन हार्दिक प्रसन्नताएं हो रही हैं?"

किसी ने जिज्ञासा वश पूछा – "आपकी शेष दो खुशियाँ कौन सी हैं?" उन्होंने कहा–"एक वह जब मैंने इस जमीन को खरीदने के लिए संपत्ति जुटाई, दूसरी तब जब जमीन पाई, तीसरी आपके सामने है।"

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
कैलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com
: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023